International Journal of Applied Research 2016; 2(2): 43-45

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(2): 43-45
www.allresearchjournal.com
Received: 29-12-2015
Accepted: 30-01-2016

वंदना रानी
डी0 सी0 कालोनी बरनाला तवंक सिरसा, हरियाणा, भारत।

Correspondence
वंदना रानी
डी0 सी0 कालोनी बरनाला तवंक सिरसा, हरियाणा, भारत।

शंकर शेष के नाटकों में व्यक्त पारिवारिक समस्याए

वंदना रानी

प्रस्तावना

शंकर शेष ने नाटक साहित्य में तत्कालीन समाज की सजीव झांकी प्रस्तुत की है। परिवार समाज की आधारभूत इकाई है। सामाजिक संस्था मे परिवार का स्थान सर्वोपरि माना जा सकता है। यह समाज की मौलिक सार्वभौमिक तथा प्रमुख संस्था है। समाज को विस्तृत तथा जीवित रखने का कार्य परिवार द्वारा ही संभव है। अगर कहा जाए कि परिवार ही समाज को अमरत्व प्रदान करता है तो कोई अतिश्योकित न होगी। 'परिवार' शब्द के बारे में विभिन्न विद्वानों ने अपने–अपने मत प्रस्तुत किये। जुकरमैन के अनुसार – एक परिवार, समूह, पुरूष स्वामी, उसकी स्त्री या स्त्रियों और उनके बच्चों में मिलकर समाज बनता है और कभी–कभी इसमें एक या अधिक अविवाहित पुरूष भी सम्मिलित रहते हैं।[1] वर्गीस तथा लॉक का कथन – एक परिवार उन व्यक्तियों का समूह है जो विवाह, रूधिर अथवा गोद लेने के सम्बन्धों में एक दूसरे में बंधे रहते है, जो एक गृहस्थी का निर्माण करते हैं, एक दूसरे के साथ अन्तः क्रिया और अन्तः संचार करते रहते है जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं जो पति–पत्नी, माता–पिता, पुत्र–स्त्री और भाई–बहन की निजी सामाजिक भूमिका में, एक दूसरे के साथ अन्तःक्रिया और अन्तः संचार करते रहते हैं और जो एक सामान्य संस्कृति का निर्माण करते हैं तथा उमें बनाए रखते हैं।''[2] आर्गबन तथा निमकॉफ ने बतलाया कि संतान सहित तथा संतान रहित पति–पत्नी की समिति को या संतान सहित स्त्री या संतान सहित पुरूष की थोड़ी बहुत समिति को परिवार कहते है।[3]

आज का समाज अधोमुख है। समाज के निवासी अपनी स्थिति में संतुश्ट नहीं हैं। नीतियों ने उन्हें अत्यधिक निर्धन बना दिया। फलस्वरूप उदर पूर्ति के लिए उन्हें अनेक अन्य बुराइयों की ओर अग्रसर होना पड़ता है। इस समय किसान, मजदूर तथा समाज के अन्य श्रमिक के परिवार दुखी हैं, क्योंकि किसानों पर जमींदारों के माध्यम में कहर ढाया जा रहा है जबकि यंत्रीकरण के माध्यम में श्रमिकों की रोजी–रोटी पर प्रहार हो रहा है। समाज में अनेक ऐसी कुरीतियां घर कर गई , जिनके कारण लोगों का जीवन जर्जरित होता जा रहा है। अनमेल विवाह, बाल विवाह, छुआछूत, हिंदू–मुस्लिम अनैक्य, दहेज प्रथा, विदेष गमन रोक आदि अनेक ऐसी बातें समाज में प्रचलित है, जिसमें भारतीय समाज में उन्नति में बहुत दूर प्रतीत होता है। लोगों में ईर्ष्या–द्वेष का भाव भी बढ़ रहा है। जिसमें सामाजिक प्रगति पर कुठाराघात हो रहा है। भारतीय विदेषियों का पक्ष प्रबल कर अपनी स्वार्थ साधना कर रहे थे जिसमें समाज का नैतिक पतन भी हो रहा है। कन्या–भ्रूण हत्या हो रही है।

भारतीय समाज के मेरूदंड में रूप में जिन कृशकों एवं श्रमिकों का उल्लेख किया जाता है उनकी हालत सबमें अधिक हेय है। अंग्रेजों ने जमींदारों को षक्तिषाली बनाकर उन्हें किसानों का शोषक बना दिया है। जमींदार किसानों पर अनेक अत्याचार करते है। उनकी उपज का अधिक में अधिक भाग लेकर उन्हें निर्धन बनाकर अपने हाथ में किए रहते है। समाज के कल्याण के लिए नियुक्ति अधिकारी तरह–तरह जुल्म ढाते थे और अपी स्वार्थ–सिद्धी करते है।

यह उल्लेखनीय है कि शंकर शेष भी अपनी रचनाओं में समाज की उन्नति का स्वप्न देख रहे हैं। इस समाज का चित्र खींचते हुए डॉ. सुधीन्द्र कहते हैं–'' वर्तमान का कृश्ण पक्ष उनकी पुतलियों में प्रषिक्षण है। समाज की सब दुर्बलताओं, रूढ़ियों, कुरीतियों जैमें अषिक्षा, बाल विवाह, अस्पृश्यता, सांप्रदायिक विद्वेष, जातीय जड़ता, स्वाभिमान भ्रंष, पष्चिमी सभ्यता में सांस्कृतिक गतिरोध नैतिक अनीति, धार्मिक अंधाचरण आदि की उन्होंने विगर्हणा की है और उदात जीवन के आदर्श का उद्बोधन किया है। '' [4]

समाज राष्ट्र का एक अंग होता है इसलिए राष्ट्र की उन्नति के लिए यह आवष्यक है कि सामाजिक उन्नति भी हो। शंकर शेष जी ने इस तथ्य को भलीभांति समझा, फलस्वरूप उन्होंने अपनी रचनाओं में भारतीय समाज (तत्कालीन) का चित्रण करके उमें उन्नति के पथ पर ले जाने का प्रयास किया।

उनके मानस में भारतीय समाज के उत्कृश्ट रूप को देखने की भावना दिखाई देती है। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों तथा अनमेल विवाह, छुआछूत, भेदभाव, हिंदू–मुस्लिम अनैक्य आदि का विरोध किया और समाज को उद्‌बुद्ध बनाकर स्वतंत्र होने के लिए प्रेरित किया।

शंकर शेष ने नाटक साहित्य में तत्कालीन समाज का बड़ा ही सुंदर चित्रण किया है। उनकी यह विषेशता दिखाई देती है कि एक ओर जहां वे समाज के हेय स्वरूप का चित्रण करते हैं वहीं उनकी उन्नति का मार्ग भी प्रषस्त करते हैं। आगे उनकी रचनाओं के आधार पर उनका सामाजिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया जाएगा।

'तिल का ताड़' इस नाट्यकृति में कुल मिलाकर आठ पात्र हैं। प्राणनाथ, गयाप्रसाद, पतितपावन, धन्नामल बनारसीदास, ब्रम्हचारी, अजय, मंजू आदि। इनमें से प्राणनाथ, गयाप्रसाद, सेठ धन्नामल तथा मंजू केंद्रित पात्र है। प्राणनाथ स्वामी नाटक का नायक है। वह शिक्षित है, शहर में छोटी सी क्लर्क की नौकरी करता है। दो सौ रुपये महीना कमाता है। बम्बई जैसे महानगर में उसे कोई किराए का मकान देने के लिए तैयार नहीं है क्योंकि वह अविवाहित है। "अब औरत कहाँ से लाऊँ या मैं खुद औरत बन जाऊँ? हे भगवान! मकान लेने के लिए मैंने झूठ कहा था, अब वही मुसीबत बन गया।"[5] सेठ धन्नामल से विवाहित होने का झूठ बोलकर मकान प्राप्त कर लेता है। गुण्डो के चंगुल में फँसी असहाय युवती मंजू की रक्षाकर उसे घर ले आता है और अपनी विवाहित के रुप में सेठ धन्नामल से उसका परिचय करवाता है। "सेठ धन्नामल से मंजू को अपनी विवाहिता के रुप में परिचित करवाते हुए उसके मन में सामाजिक प्रतिष्ठा के धूमिल होने का द्‌वंद्‌व बराबर रहता है। एक ओर रंजना से प्रेम और दूसरी ओर आवास समस्या के समाधान हेतु विवाहित होने का मुखौटा उसे दब्बू, कायर और कमजोर बना देता है।"[6] सेठ धन्नामल 'प्राणनाथ' के मकान मालिक है। सेठ धन्नामल पूराने संस्कारों के व्यक्ति होने के कारण अपने मकान में किसी अविवाहित पुरुष को रखना नहीं चाहते हैं। मंजू नाटक की नायिका है। प्राणनाथ का बचपन का दोस्त 'अजय' की पत्नी है। वह एक बाल विधवा थी पर अब वह अजय की ब्याहता है। नाटक का नायक प्राणनाथ उसे गुंडों से बचाकर उसके चरित्र की रक्षाकर उसे अपने घर ले आता है। प्राणनाथ के कहने पर वह उसकी बीबी होने का नाटक करती है। इन प्रमुख पात्रों के साथ–साथ नाटक मे कुछ गौण पात्र भी हैं जो प्रमुख पात्रों के चरित्रों का उद्‌घाटन करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनमें से एक पतितपावन शर्मा 'प्राणनाथ का मित्र है एक षड़यत्रधारी इन्सान, ढोंगी समाजसुधारकों की भाँति लगता है। रंजना अप्रस्तुत पात्र है। जिससे प्राणनाथ शादी करना चाहता है। ब्रम्हचारी पूरे नाटक में हास्य व्यंग्य का निर्माण करने वाला पात्र है।

'तिल का ताड़' नाट्यकृति में कुल मिलाकर आठ पात्र हैं। प्राणनाथ, गयाप्रसाद, पतितपावन, धन्नामल बनारसीदास, ब्रम्हचारी, अजय, मंजू आदि। इनमें से प्राणनाथ, गयाप्रसाद, सेठ धन्नामल तथा मंजू केंद्रित पात्र है। प्राणनाथ स्वामी नाटक का नायक है। वह शिक्षित है, शहर में छोटी सी क्लर्क की नौकरी करता है। दो सौ रुपये महीना कमाता है। बम्बई जैसे महानगर में उसे कोई किराए का मकान देने के लिए तैयार नहीं है क्योंकि वह अविवाहित है। "अब औरत कहाँ से लाऊँ या मैं खुद औरत बन जाऊँ? हे भगवान! मकान लेने के लिए मैंने झूठ कहा था, अब वही मुसीबत बन गया।"[7] सेठ धन्नामल से विवाहित होने का झूठ बोलकर मकान प्राप्त कर लेता है। गुण्डो के चंगुल में फँसी असहाय युवती मंजू की रक्षाकर उसे घर ले आता है और अपनी विवाहित के रुप में सेठ धन्नामल से उसका परिचय करवाता है। "सेठ धन्नामल से मंजू को अपनी विवाहिता के रुप में परिचित करवाते हुए उसके मन में सामाजिक प्रतिष्ठा के धूमिल होने का द्‌वंद्‌व बराबर रहता है। एक ओर रंजना से प्रेम और दूसरी ओर आवास समस्या के समाधान हेतु विवाहित होने का मुखौटा उसे दब्बू, कायर और कमजोर बना देता है।"[8] सेठ धन्नामल 'प्राणनाथ' के मकान मालिक है। सेठ धन्नामल पूराने संस्कारों के व्यक्ति होने के कारण अपने मकान में किसी अविवाहित पुरुष को रखना नहीं चाहते हैं। मंजू नाटक की नायिका है। प्राणनाथ का बचपन का दोस्त 'अजय' की पत्नी है। वह एक बाल विधवा थी पर अब वह अजय की ब्याहता है। नाटक का नायक प्राणनाथ उसे गुंडों से बचाकर उसके चरित्र की रक्षाकर उसे अपने घर ले आता है। प्राणनाथ के कहने पर वह उसकी बीबी होने का नाटक करती है। इन प्रमुख पात्रों के साथ–साथ नाटक मे कुछ गौण पात्र भी हैं जो प्रमुख पात्रों के चरित्रों का उद्‌घाटन करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। इनमें से एक पतितपावन शर्मा 'प्राणनाथ का मित्र है एक षड़यत्रधारी इन्सान, ढोंगी समाजसुधारकों की भाँति लगता है। रंजना अप्रस्तुत पात्र है। जिससे प्राणनाथ शादी करना चाहता है। ब्रम्हचारी पूरे नाटक में हास्य व्यंग्य का निर्माण करने वाला पात्र है।

अतः परिवार को सामान्य निवास आर्थिक सहयोग एवं प्रजनन के आधार पर समाज की अन्य संस्थाओं में अलग किया जा सकता है। सामाजिक विकास के प्रत्येक स्तर पर समाज का अस्तित्व बना रहता है। स्नेह, आदर, श्रद्धा, वात्सल्य, त्याग, प्रेम और संतान कामना आदि भावनाओं में परिवार बंधे रहता है। अपनी संस्कृति धार्मिक विष्वास, सामाजिक मूल्यों का पाठ बालक को परिवार में ही मिलता है।

इस समय समाज में जन–जीवन बहुत अस्त–व्यस्त था। अंग्रेजों की पराधीनता में भारतीयों को अपनी मौलिक भावनाओं के प्रकटीकरण का अवसर नहीं मिलता था अतैव लोगों में हीन भावना घर कर गई थी। लोगों में अतीव असंतोश व्याप्त था फलस्वरूप उनका जीवन भार स्वरूप हो गया था। वे अनेक कुरीतियों के षिकार थे जिसमें अपनी उन्नति का प्रयत्न भी नहीं करते थे। शंकर शेष जी इस कुरीतिपूर्ण जीवन को स्वतंत्रता के मार्ग में सबमें बड़ा व्यावधान मानते हैं। वे अव्यवस्थित पारिवारिक स्थिति पर अपनी प्रतिक्रिया प्रकट करते हुए कहते हैं–

'बिन बाती के दीप' इस डॉ. शंकर शेष रचित नाट्य कृति में कुल मिलाकर पाँच पात्र हैं। शिवराज, कॅप्टन आनंद, नटवर यह तीन पुरुष पात्र हैं तथा विशाखा, मंजू नारी पात्र हैं। शिवराज नाटक का केंद्रीय पात्र है। नाटक के आरंभ में ही उसका परिचय प्राप्त होता है। शिवराज दो प्रकार का व्यक्तित्व लेकर हमारे सामने उपस्थित होता है। अंदर से कुछ और तथा बाहर से कुछ और है। बाहर से वह महान लेखक, उपन्यासकार तथा आदर्श पति है। उसके एक उपन्यास पर पचास हजार का पुरस्कार मिल चुका है। उसकी ख्याति जन–जन तक पहुँची हुई है। वह विशाखा नाम की लड़की से प्रेम करता है लेकिन इसी बीच विशाखा अंधी हो जाती है। शिवराज अंधी विशाखा के साथ विवाह करता है और दुनिया की नजर में और ऊँचा उठता है। "अंधी से विवाह करने का घोर साहस और त्याग दिखाने वाले शिवराज की प्रशंसा पूरे शहर में होने लगी थी। बाहर–बाहर सबने मुझे एक आदर्श प्रेमी घोषित किया था, पर भीतर–भीतर सबने मुझे बेवकूफ कहा था।"[9] इस शिवराज के चरित्र का दूसरा पहलु भी सामने आता है। वह अंधी विशाखा से इसलिए विवाह करता है क्योंकि विशाखा एक प्रतिभाशाली लेखिका है, विशाखा के लिखे हुए उपन्यास वह खुद के नाम से प्रकाशित करता है। विशाखा की आँखों का इलाज बड़े–बड़े डॉक्टरों सें कराने का ढोंग करता है। विशाखा की आँखें और ज्यादा बिगड़ जाए इसलिए गलत दवा उसकी आँखों में छोड़ता है। दूसरी औरत के साथ सम्बन्ध बनाए रखता है। उसे भी अपने षड़यंत्र में शामिल कर लेता है। पैसों के बल पर उसका मुंह बंद कर देता है। इस प्रकार अंधी विशाखा को धोखे में रखकर उसके द्‌वारा रचित तीन उपन्यास अपने नाम से छपवा लेता है और अंतरराष्ट्रीय प्रसिद्‌धि प्राप्त करता है। इस प्रकार शिवराज का चरित्र महान फरेबी, कुटील, क्रुर आदमी का है। विशाखा इस नाटक का दूसरा केंद्रीय चरित्र है। वह शिवराज

की धर्म पत्नी है। वह एक प्रतिभासंपन्न लेखिका है। वह शिवराज से प्रेम करती है, लेकिन असमय अंधी हो जाती है। शिवराज उसके अन्धेपन का फायदा उठाने के लिए उससे विवाह करता है। उसके साथ विश्वासघात करता है। लेकिन अन्धी विशाखा इसे विश्वासघात न समझकर शिवराज ने उसके लिए किया हुआ त्याग ही समझती है। उसी के शब्दों में "शिव, तुमने मुझे जीवित रखा, मेरी आत्मा को जीवित रखा। मेरी वेदना को तुमने हजारों लोगों तक पहुँचाया। तुम मेरे स्वामी, सखा सभी बने। तुमने अपने कवि को समर्पित किया। तुमने अपने कण्ठ को अवरुद्ध किया। तुम मुझ अंधी की लाठी बने। तुमने मेरी कीर्ति देश के हर छोर तक पहुँचाई। पर मैं हत–भागिनी, तुम्हारे लिए कुछ न कर सकी। तुम्हे एक कप चाय भी न पिला सकी। तुम्हारे कोट में एक बटन तक नहीं टाँक सकी।"[10] विशाखा शिवराज के अमूल्य सहयोग से अपनी पीड़ा, वेदना, विचारों तथा अनुभूति को मूर्त रुप देती है। शिवराज के लिए कुछ न कर पाने का दुःख उसे हमेशा सताता रहता है। इस प्रकार एक आदर्श भारतीय तथा पतिव्रता नारी के रुप में विशाखा हमारे सामने आती है।

इस उदाहरण में समाज के दाम्पत्य संबंधों पर शंकर शेष जी के विचार स्पश्ट हैं कि वे इसका घोर विरोध करते थे। क्योंकि वे जानते थे कि जब तक छोटी–छोटी बुराइयों को नहीं सुधारा जाएगा तब तक राष्ट्रीयता को पल्लवित और पुश्पित करना कठिन होगा।

पुरुष–प्रधानता के कारण नारी के भावों के प्रकटीकरण की स्वतंत्रता न थी। समाज के अधिकांश लोग अत्याचार को सहने के आदी हो गए थे।'बाढ़ का पानी' नाटक में कुल मिलाकर ग्यारह पात्र हैं। नवल, छीतू, गनपत, बटेसर, बरकत, ठाकूर, पंडित, रग्घू, यह आठ पुरुष पात्र है ं तथा लक्ष्मी, चंदा, कावेरी आदि स्त्री पात्र हैं। नवल 'बाढ़ का पानी' इस नाटक का नायक है। वह छीतू और लक्ष्मी का लड़का है। नवल आदर्शवादी विचारों का है, उस पर गांधीजी के विचारों का काफी प्रभाव है परोपकारी जो है तुम्हारा बेटा! दुनिया–भर की फिकर जो उसके सिर चढ़ी रहती है। बात–बात में गांधी की दुहाई देता है।"[11] वह शहर में पढ़ा लिखा होने पर भी शहर में नौकरी नहीं करना चाहता। गाँव में रहकर ही गाँव का भला करना चाहता है। वह अंधविश्वास से बनी खाई को मिटाना चाहता है। उसका मानना है कि सबके साथ हरिजनों को भी भगवान की पूजा करने का, मंदिर में प्रवेश करने का अधिकार है और इसी कारण उसने भगवान के मंदिर में जाकर पूजा करनी चाही, परंतु लोगों ने उसे मारा–पीटा और गाँव से बाहर निकाल दिया, इन्हीं लोगों को नवल बाढ़ के कारण आई आपत्ति में सहारा देता है। वह जात–पात मिटाकर अपने टीले को चंदन का दीप बनाना चाहता है। लक्ष्मी सहायक नारी पात्र है। वह छीतू की पत्नी तथा नवल की माँ है। लक्ष्मी एक आदर्श नारी के रुप में हमारे सामने आती है। वह एक अशिक्षित नारी है लेकिन शिक्षित नारियों से बढ़कर है, परोपकारी है, हरदम दूसरों की सहायता करने में ही लगी रहती है। बाढ़ के समय मुसीबत में फँसे लोगों को दाल–चावल बाँटती फिरती है। "इस छोटे–से अछुतों के मुहल्ले में कितने लोग बेसहारा आते हैं। बेटी, उन्हे खिलाना होगा। बाढ़ कब उतरती है। ... चल, हम दोनों बैठकर बोरा भर चावल साफ कर लें।"[12] तथा "लक्ष्मी नारी–चेतना का प्रतीक है। मानव और समाज की बहती धारा ने नारी की अस्मिता पहचानने का अवसर दिया है। यह अनिवार्य नहीं है कि नारी घर से बाहर निकलकर नौकरी करने से ही समाज के कल्याण में सहायक होती है।"[13] इस प्रकार लक्ष्मी आदर्श पत्नी, आदर्श माता तथा परोपकारी नारी है। नाटक के शुरु में पंडित को खलनायक के रुप में दिखाया गया है। अंत में वह छीतू, लक्ष्मी के आतिथ्य धर्म से प्रभावित होता है और प्रायश्चित करता है। सबके लिए मंदिर खुला करता है, गाँव का घर औषधालय के लिए दे देता है और हरिजनों की बस्ती में टीले पर घर बनवाता है। नाटक के अन्य पात्रों में से छीतू सहायक पुरुष पात्र है। मुसीबत में अपने घर में सबको आसरा देता है। कावेरी ठाकूर की बेटी है, वह एक दुःखी लड़की है क्योंकि चंदू नामक एक लड़के ने उसकी छेड़छाड़ की थी।

निष्कर्ष

कहा जा सकता है कि इसके दुष्परिणाम समाज में लोगों का दायरा सीमित हो गया है। ग्रामीण लोग कूप मंडूक बनकर अपनी परंपराओं में बद्ध रहते हैं। समाज में पर्दा प्रथा, फूट, भेदभाव, छुआछूत, का साम्राज्य था। हिंदू–मुस्लमान परस्पर एक–दूसरे में दूर रहते है। शंकर शेष जी को इन सबको देखकर बड़ा ही कष्ट है। जाति–पाति के भेदभाव में गिरती हुई सामाजिक स्थिति पर दुःख प्रकट करते हैं। समाज में लोग निष्क्रियता हो वि देशी अंग्रेजों का प्रभुत्व स्वीकार कर बैठे थे। उनका सामना करने की चेष्टा नहीं करते थे। शंकर शेष जी समाज के अधिकांश लोगों की इस निष्क्रियता को देख बड़े दुखी थे। उन्हें यह अच्छी प्रकार विदित था कि जब तक समाज के सभी वर्गों को उद्बुद्ध नहीं किया जाएगा तब तक राष्ट्री आंदोलन सफल नहीं हो सकता।

संदर्भ सूची

1. एस.जुकरनैन, द सोषल लाइफ आफ मन्कीज एण्ड, पृ.225
2. ई.डब्ल्यू.वर्गीस तथा एच.जे.लॉक, द फैमिली फ्राम इंस्टीट्यूषन आफ कम्पेनियषिन, पृ.8
3. डब्ल्यू.एफ. ऑर्गबर्न और एम.एफए निमकॉफ, ए हैण्ड बुक ऑफ सोषियोलॉजी, पृ.459
4. प्रो. सुधींद्र, हिंदी कविता में युगांतर (प्रथम संस्करण), पृष्ठ–66
5. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग तीन, पृ. 278
6. डॉ. सुरेश गौतम एवं डॉ. वीणा गौतम : 'राजपथ से जनपथ, नटशिल्पी शंकर शेष, बिन बाती के दीप, पृ.75
7. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग तीन, पृ. 278
8. डॉ. सुरेश गौतम एवं डॉ. वीणा गौतम : 'राजपथ से जनपथ, नटशिल्पी शंकर शेष, बिन बाती के दीप, पृ.75
9. डॉ. शंकर शेष : बिन बाती के दीप, पृ.27
10. डॉ. हेमंत कुकरेती : 'शंकर शेष : समग्र नाटक भाग एक, बिन बाती के दीप,पृ.112
11. डॉ. हेमंत कुकरेती : शंकर शेष : समग्र नाटक भाग दो, बाढ़ का पानी, पृ.57
12. वही पृ.72
13. डॉ. बळीराम भुक्तरे : शेष के नाटको में शेष विशेष, पृ.118